मक़सूदे काबा

हज़रत अली की काबे में विलादत और अक़्लों की हैरतअंगेज़ ठोकरें

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

वाक़िआ अपनी नौइयत में निराला हो तो कुछ ताज्जुब नहीं कि इसके रुमूज़ में सतही नज़रें ठोकरें खाती फिरें और नाक़िस अक़्लें इसकी तह तक पहुँचने की फ़िक्र में अन्धेरों के ऊबड़-खाबड़ रास्तों के अन्दर हाथ पाँव मारती रहें और फिर जब कि इस ग़ौरो-फ़िक्र के अन्दर कोई ज़ाती जज़्बा भी काम कर रहा हो।

जिस तरह पहली तारीख़ के चाँद पर ग़ौर करने वाला शख़्स कभी-कभी अपने ख़यालों की मदद से बहुत से ऐसे चाँद देख लेता है जिनका वजूद नहीं है और कभी यक़ीन भी कर लेता है कि बेशक मैंने चाँद देखा हालांकि चाँद का पता नहीं और किसी के इन्तिज़ार में दरवाज़े की खटखटाहट पर कान लगाने वाला हर बार इसका एहसास करता है कि कोई पुकार रहा है या दरवाज़ा खटखटा रहा है हालांकि ऐसा नहीं है, इसी तरह किसी ख़ास जज़्बे के तहत अक़्ल पर ज़ोर देने वाला बहुत सी बातों को हक़ीक़त के लिबास में देखने लगता है हालांकि उनको हक़ीक़त से दूर का भी ताल्लुक़ नहीं है।

बेशक जिस तरह पहले का इलाज ये है कि वह नज़र को जमा कर देखे तो मालूम हो जायेगा कि वह जिसको चाँद समझ रहा है वह एक वहम है और पूरे तौर पर ध्यान से सुने तो मालूम हो कि उसकी सुनी हुई आवाज़ ख़ुद उसी के कानों की पैदावार है इसी तरह उसकी तरकीब ये है कि वह अपने ज़हन को हर तरह के जज़्बात से साफ़ करके हक़ीक़त पर बग़ैर किसी लगावट के ग़ौर करे और अपने ख़यालात का अक़्ली व नक़्ली मुसल्लमा मुक़द्दमात के मेयार के मुताबिक़ जाएज़ा ले तो मालूम हो जाएगा कि जिसे वह हक़ीक़त समझता था वह ख़याल का धोका है।

13 रजब और अमीरुलमोमिनीन[अ०] की विलादते ख़ान-ए-काबा का वाक़िआ ख़ुद अपनी नौइयत में बेनज़ीर था और फिर आम एतेक़ादात ने ज़ाहिरी तरतीबे ख़िलाफ़त को तरतीबे फ़ज़ीलत का मेयार क़रार देकर ज़हनियतों में जो जुमूद पैदा कर दिया उसका नतीजा ये था कि अमीरुलमोमिनीन[अ०] की हर फ़ज़ीलत पर जो हज़रत की ज़ात से मख़सूस है इसी जज़्बे के तहत में नज़र की गई कि वह अपने ज़ाती ख़यालात व जज़्बात में रख़्नाअन्दाज़ है इसलिए कोशिश से ऐसे वजूह की तलाश की जाए जो इस फ़ज़ीलत को पामाल या कम से कम मशकूक बना देने का ज़रिया हो सकें चुनान्चे विलादते अमीरुलमोमिनीन के बारे में भी तरह-तरह के एतेराज़ पेश करके पर्दा डालने की कोशिश की जाती है जिन पर इस्लामी हदीसों और सीरत की रौशनी में मुसन्निफ़ाना नज़र डालना तहक़ीक़ पसन्द इन्सान का फ़र्ज़ है।

पहला एतेराज़

काबा के सिलसिले में गुस्ताख़ी

"अमीरुलमोमिनीन[अ०] की काबे में विलादत के वक़्त काबा क़िब्ला न था, बुतख़ाना था तो एक बुतख़ाने में पैदा होना कोन सी इज़्ज़त की बात है?"

इस एतेराज़ की जो हालत है वह हक़ीक़त में अल्लाह के घर ख़ाना काबा की तौहीन और उसकी अज़मत व बड़ाई को कम करने के लिए है।

एतेराज़ से साफ़ ज़ाहिर है कि काबे को जो कुछ इज़्ज़त हासिल हुई है वह उसके क़िब्ला होने की वजह से

लेकिन ये ख़याल तारीख़ व हदीस और इस्लामी आसार न जानने की बुनियाद पर है। मक्का की ज़मीन का ये पाक घर जिसका नाम काबा है, अपने एहतेराम व बड़ाई में किसी ख़ास वक़्त व ज़माने का पाबन्द नहीं है बल्कि पैदाईश के पहले ही दिन से इसकी बड़ाई और शान भी महफ़ूज़ थी। वह वक़्त कि जब बनी आदम का वजूद न था और काएनात का पन्ना इन्सान के नक़्श से सादा था उसी वक़्त ये घर अपनी बड़ाई और इज़्ज़त में ख़ास निशान का मालिक था। और इसी वजह से जब बनी आदम का वजूद हुआ तो उनके लिए तवाफ व इबादत के लिये यही घर चुना गया चुनानचे क़ुर्आन मजीद में इरशाद होता है:

''यक़ीन जानो कि सबसे पहला घर जो बनी आदम के लिए क़रार दिया गया वह घर है जो मक्का में है, वह मुबारक है और तमाम आलम की हिदायत (की वजह) है। इसमें खुली हुई निशानियाँ हैं जैसे मक़ामे इब्राहीम[अ०] जो शख़्स इसमें दाख़िल हो जाए वह अमान में है और ख़ुदा के लिए लोगों पर उस घर का हज वाजिब है, उस शख़्स पर जो इसकी ताक़त रखता हो और जो शख़्स कुफ्र को चुने (तो चुने) ख़ुदा तमाम आलम से बेनियाज़ है।'' (सूर-ए-आले इमरान 96-97)

तफ़्सीरे बैज़ावी में जो अहलेसुन्नत की मुस्तनद किताब है, इस आयत की तफ़सीर करते हुए लिखा है:-

''ये सबसे पहला घर है जिसको आदम ने तामीर किया लेकिन तूफ़ाने नूह में वह बेनिशान हो गया फिर हज़रत इब्राहीम ने इसकी तामीर की और बाज़ ने कहा है कि इस जगह पर हज़रत आदम ने पहले एक घर था जिसका नाम था ''ज़राह'' और फ़रिश्ते उसका तवाफ किया करते थे, जब आदम[अ०] ज़मीन पर उतारे गये तो उनको हुक्म हुआ कि उसका हज करें और उसके पास तवाफ करें और तूफ़ाने नूह में चौथे आसमान पर उठा लिया गया कि आसमान के फ़रिश्ते उसका तवाफ़ करें।''

(तब-ए-इस्लाम्बोल, पेज-18)

दूसरी आयतः

और जबकि कहा इब्राहीम ने परवरदिगार इस शहर को अमन की जगह बना दे और मुझको और मेरी औलाद को बचा इस बात से कि हम बुतों की पूजा-पाठ करें। परवरदिगार! ये बहुत बहुत लोगों की गुमराही की वजह बनें है तो जो शख़्स मेरी पैरवी करे वह मुझ से है और जो मेरी नाफ़रमानी करे तो मग़फ़िरत व रहम तेरा काम है। परवरदिगार मैंने अपनी औलाद में से कुछ को बसाया है ऐसी वादी में जो पैदावार वाली नहीं है तेरे पाक घर के पास, ऐ ख़ुदा ताकि ये नमाज़ को क़ायम करें। अब तो कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ मोड़ दे और उनको मेवों के साथ रोज़ी पहुँचा इसलिए कि ये तेरा शुक्र अदा करें।''

अल्लामा बैज़ावी इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं:-

''तेरे पाक घर के पास यानी वह घर जिससे तअर्रुज़ को और जिसकी बेअदबी को तूने हराम क़रार दिया है या जो हमेशा से इज़्ज़तो एहतेराम वाला रहा है कि बड़े-बड़े ज़ालिम इससे डरते थे या तूफ़ाने नूह[अ०] को इससे रोक दिया गया कि इस से पार न पा सका इसी वजह से इसका नाम अतीक़ हुआ यानी ये तूफ़ान से आज़ाद किया गया है।''

इन तीनों आयतों की तफ़सीर से कुछ बातें सामने आती हैं।

1- काबा दुनिया के मकानों में सबसे पहले पैदा हुआ।
2- वह ख़ुदा की तरफ़ से बरकत वाला बनाया गया है।
3- आदम को सबसे पहले इसके तवाफ और हर का हुक्म हुआ और तूफ़ान के ज़माने में फ़रिश्ते इसका तवाफ़ करते रहे।
4- हज़रत इब्राहीम[अ०] की दुआ थी ''इन्द बैइतिकल मुहर्रम'' तेरे पाक घर के पास'' इससे ज़ाहिर है कि ख़लीलुल्लाह के ज़माने से काबा का एहतेराम ख़ुद से साबित है।
5- तूफ़ाने नूह[अ०] जो सारी दुनिया में था वह ख़ुदा के हुक्म से उस जगह से अलग था और काबा उससे बचा हुआ था।

इसके अलावा काबे की तामीर जिस एहतेमाम और जिन हाथों से हुई वह काबे की बड़ाई और अज़्मत को साबित करने के लिए बहुत काफ़ी है।

सबसे पहले इस घर के बनाने वाले मुक़र्रब फ़रिश्ते हैं उन्होंने ख़ुदा के हुक्म से आकर इसकी तामीर की जिसका बयान अल्लामा क़ुतुबुद्दीन हनफ़ी की

किताबुल-अअ्लाम बि-अअ्लाम बैतिल्लाहिल हराम' (मतबूआ मिस्र) पेज-13 में मौजूद है।

दूसरी तामीर हज़रत सफ़ियुल्लाह आदम[अ०] के हाथों हुई। (किताबुल अअ्लाम, पेज-13)

तीसरी तामीर औलादे आदम के हाथों हुई और चौथी तमीर हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह[अ०] के हाथों से है जिसके बारे में अल्लामा क़ुतुबुद्दीन हनफ़ी लिखते हैं:

हज़रत इब्राहीम[अ०] तामीर करते थे और इस्माईल[अ०] अपने कन्धे पर पत्थर उठा-उठा कर लाते थे। जब दीवार ऊची हो गई तो हज़रत इब्राहीम[अ०] पत्थर पर खड़े होते और तामीर करते थे। और इस्माईल[अ०] चारों तरफ उन पत्थरों को लगाते थे यहाँ तक कि हजरे अस्वद की जगह तक पहुँचे। इब्राहीम[अ०] ने इस्माईल[अ०] से कहा कि एक पत्थर लाओ ताकि उसको यहाँ रख दूँ, वह लोगों के लिए निशानी रहेगा कि इसी से तवाफ की शुरुआत करें। तो फिर इस्माईल[अ०] ढूँढने के लिए गये इधर जिब्रईल[अ०], इब्राहीम[अ०] के पास हजरे अस्वद को ले आये, ख़ुदा ने तूफ़ाने नूह के ज़माने में उसे अबुक़बीस पहाड़ में दबा दिया था जिब्रईल[अ०] ने उसे इस जगह पर रखा और इब्राहीम[अ०] ने उस पर तामीर की और हजरे अस्वद उस ज़माने में अपनी रौशनी से दुनिया को चारों तरफ रौशन किये हुए था।'' (किताबुल अअ्लाम, पेज-14)

इस इन्तिज़ाम और एहतेमाम से ख़ुदा के हुक्म से जिस घर की तामीर हुई हो उसकी इज़्ज़त व अज़्मत का क्या पूछना? बल्कि इस सूरते हाल से साफ़ ज़ाहिर है कि काबे की इज़्ज़त और उसकी बड़ाई मुसलमानों के क़िब्ला होने के बाद से नहीं है बल्कि पहले दिन से जबकि ख़ुदा बड़ाई और इज़्ज़त बाँट रहा था उस वक़्त पूरे आलम में काबा इज़्ज़त वाला और मुम्ताज़ हो गया था और उसको इज़्ज़त और बड़ाई हासिल हो चुकी थी। काबे में बुतों के रख देने से काबे की बड़ाई कम नहीं हो सकती बल्कि ये मक्के के काफ़िरों की नासमझी और नाक़दरी थी कि उन्होंने ऐसी बरकत और इज़्ज़त वाली जगह को अपने हाथों से बनाये हुए बुतों के लिए मुन्तख़ब किया और हक़ीक़त में अगर ग़ौर किया जाए तो इसकी वजह भी काबे की इज़्ज़त और बड़ाई ही थी चूँकि सभी नबियों और रसूलों की ज़बान से काबे की अज़्मत कानों में पड़कर दिलों में बैठ गई थी इस वजह से उन लोगों ने अपने माबूदों के लिए इस घर से बेहतर कोई जगह न पायी लेकिन इसकी वजह से काबे की अज़्मत को कोई चोट नहीं पहुँच सकती।

फ़त्हे मक्का 8 हिजरी में हुई और बुतों को उसी साल निकाला गया है। यह रसूल[स०] की ज़िन्दगी का तक़रीबन आख़री दौर था। ऐतेराज़ करने वाले के मुताबिक़ इसके पहले काबा बुतख़ाना था और बैतुलमुक़द्दस से काबे की तरफ क़िब्ला बदल देना इससे बहुत पहले का वाक़िआ है। तो क्या कहा जा सकता है कि ख़ुदा ने एक बुतख़ाने को मुसलमानों का क़िब्ला बना दिया।

इसी तरह हज वाजिब होने की आयत भी 6 हिजरी में उतरी जो बुतों के गिराये जाने से तीन साल पहले का वाक़िआ है तो क्या ख़ुदा ने बुतख़ाने का हज और तवाफ मुसलमानों पर वाजिब किया था?

अब्दुल मुत्तलिब के ज़माने में अब्रहा का हमला और अस्हाबे फ़ील की चढ़ाई और ख़ुदा की क़ुदरत से अबाबीली लश्कर के हाथों उसकी तबाही क़ुरआने मजीद के पन्नों में मौजूद है। क्या ख़ुदा की तरफ से एक बुतख़ाने की हिफ़ाज़त यूँ ही की जाती है?

मालूम हुआ कि बुतों के रख देने से काबे की इज़्ज़त घट नहीं गई थी। इसी वजह से काबे को क़िब्ला बनाने और उसका हज वाजिब करने में बुतों के हटने का इन्तिज़ार नहीं किया गया और अब्रहा के हमले से हिफ़ाज़त भी बुतों के निकाले जाने पर रुकी नहीं रही।

काबा बैतुल्लाहिल हराम था जिसका हज और तवाफ हमेशा से वाजिब है और चूँकि पूरी काएनात में अफ़ज़ल व बेहतर था ख़ुदा की तरफ से अमीरुलमोमिनीन की विलादत के लिए चुना गया और उसने अपनी क़ुदरत और हिकमत से बन्द दरवाज़े को छोड़कर नया दर बनाया और अपने ख़ास बन्दे की पैदाइश के लिए अपने ख़ास घर को ख़ाली कर दिया और मज़ा ये है कि काबे के दामन पर बुतख़ाना कहकर जो धब्बा लगाया गया था उसके छुड़ाने का सेहरा भी उसी पैदा होने वाले के सर बंधा और नबी[स०] के कन्धों पर क़दम रखकर बुतों का तोड़ा जाना उसी हस्ती की बड़ाइयों का मुख़्तसर सा हिस्सा है।

दूसरा एतेराज़

"पैदाइश के वक़्त औरत जिस तरह की गन्दगियों से घिरती है वह किसी तरह काबे की पाकी और इज़्ज़त से मुनासिबत नहीं रखते, इसलिए ये रिवायत मानने के क़ाबिल नहीं है।"

ये सवाल हक़ीक़त में ख़ुदावन्दे आलम पर एतेराज़ की शान रखता है। इसके बाद कि शिया और सुन्नी दोनों फ़रीक़ों की किताबों से ये मतलब बिल्कुल साबित है कि अमीरुलमोमिनीन अली[अ०] की पैदाइश ख़ुदावन्दे आलम के हुक्म से काबे के अन्दर हुई और फ़ातिमा बिन्ते असद को ख़ुदावन्दे आलम ने अपनी क़ुदरते कामिला के साथ काबे के अन्दर जगह दी थी तो अब इस सवाल का मौक़ा ही नहीं रहता कि काबा पाक है और पैदाईश के वक़्त औरत नजासत वाली होती है।

एतेराज़ करने वाले की नज़र में दुनिया का चलने वाला निज़ाम (सिस्टम) बदला नहीं जा सकता और ख़ुदावन्दे आलम उसके बदलने से आजिज़ है और ख़ुदा की क़ुदरत का दायरा छोटा है। जिन चीज़ों का होना अक़्ल में नहीं आता है उनसे बेशक क़ुदरत का ताल्लुक़ नहीं होता लेकिन जिन चीज़ों का होना अक़्ल के हिसाब से नामुमकिन न हो और इमकानी हदों के अन्दर हों उनका आदत के निज़ाम के ख़िलाफ़ होना किसी अक़ली हिदायत या नज़रिये के ख़िलाफ़ नहीं है।

पैदाईश के वक़्त औरतों का मामूली नजासतों में पड़ जाना आम निज़ाम (सिस्टम) में सही ज़रूर है मगर अक़ली एतेबार से ज़रूरी नहीं है और न इसके ख़िलाफ़ कोई अक़ली फैसला मौजूद है। ऐसी सूरत में जब ख़ुदावन्दे आलम ने फ़ातिमा बिन्ते असद को अपने हुक्म से काबे के अन्दर दाख़िल किया और उस पैदाईश को वहाँ होने दिया तो समझ लेना चाहिए कि उसने अपने पाक और अज़मत वाले घर की पाकी का ख़याल रखा है।

अगर क़ुरआन और हदीस की रौशनी में नज़र की जाए तो मालूम होगा कि ये वह बच्चा था जिसकी पाकी का ख़ुदावन्दे आलम अपनी ताक़त के साथ ज़िम्मेदारी ले चुका था। और उसकी पाकी पर न टलने वाला हमेशा का इरादा क़ायम था और इसी बुनियाद पर इस्लामी हदीस की किताबों में ऐसी खुली बातें मौजूद हैं जो इस मुक़द्दस ज़ात की ग़ैर मामूली पाकीज़गी का पता देती हैं। चुनानचे अल्लामा मनादी मिसरी ने कुनूज़ुद्दक़ाएक़ में जनाब रिसालत मआब[स०] से रिवायत की है: "किसी शख़्स को जाएज़ नहीं है कि वह मस्जिद में नापाक हो सिवाए मेरे या अली[अ०] के"

और अबूसईद ख़ुदरी की रिवायत है "हज़रत रसूल[स०] ने फ़रमाया ऐ अली[अ०] किसी शख़्स के लिए हलाल नहीं है कि वह इस मस्जिद में नापाक हो सिवाए मेरे और तुम्हारे।"

और शैख़ सुलेमान बल्ख़ी क़ुन्दूज़ी ने यनाबीउल मवद्दह् में रिवायत की है कि हज़रत रसूल[स०] ने एक लम्बी हदीस में फ़रमाया: "बेशक अली मेरे लिये वैसे ही हैं जैसे मूसा के लिये हारून और वह मुझ से है और किसी के लिए जायज़ नहीं है इसमे औरतों से निकाह के सिवाए अली और उनकी औलाद के"

इस तरह की बहुत सी हदीसें अहलेसुन्नत की किताबों में मौजूद हैं और इनके अलावा अगर उन हदीसों पर नज़र की जाए जिनमें जनाबे फ़ातिमा ज़हरा[स०] के बतूल नाम होने की वजह बयान की गई है तो साफ़ तौर पर मालूम होता है कि इन लोगों की पाकी इस हद पर थी कि उन वक़्तों में जिन वक़्तों में आम लोग नापाक समझे जाते हैं उनमें भी इन लोगों की पाकी अपनी हालत पर बाक़ी रहती थी और इन लोगों के दामन पर नापाकी का गुज़र नहीं था।

फिर इन हदीसों को देखते हुए जो मुस्तनद इस्लामी किताबों में मौजूद हैं ख़ान-ए-काबा में अमीरुलमोमिनीन की पैदाईश में कौन सा ज़ुल्म हो सकता है? पैदा होने वाला जब इतना पाक और मासूम था तब ही ख़ालिक़े काएनात की तरफ से ख़ान-ए-काबा को जिसकी पाकी का इब्राहीम[अ०] और इस्माईल[अ०] को हुक्म हो चुका था और "तह्हिरा बैइती" कह कर उसकी पाकी का एहतेमाम जता दिया गया था उसकी विलादत के लिए ख़ाली कर दिया गया और बैतुल्लाह में अल्लाह के वली की पैदाइश हुई।

तीसरा एतेराज़

"ये रिवायत अहलेसुन्नत की किताबों में नहीं है"

(बक़िया पेज-14 पर)

है मगर उनका ज़मीर भी शायद इसको पसन्द न करेगा।

कहा जाता है कि रोना बुज़दिली की निशानी है। मैं कहता हूँ कि किसी ख़तरनाक जंग में मौजूद रह कर ख़तरे के एहसास से रोना बुज़दिली की निशानी हो सकती है मगर किसी ख़तरनाक जेहाद में न शामिल होने पर रोना बिल्कुल बहादुरी और शुजाअत है। याद रखिये कि कर्बला के मुजाहिदीन ज़ख़्म खाते और ख़ून बहाते हुए गिरया नहीं करते थे। बल्कि वहाँ तो बुरैर और अब्दुर रहमान आपस में मज़ाक़ करते नज़र आते हैं। वहाँ तो अब्बास[अ०] और अली अकबर[अ०] का क्या कहना अली असग़र[अ०] तक मुस्कुराते हुए शहीद हुए हैं।

हाँ अब्बास[अ०] नहीं रोये और अली अकबर[अ०] नहीं रोए क्योंकि उन्हें ख़ून बहाने का मौक़ा मिल गया। मगर ज़ैनुलआबिदीन[अ०] उम्र भर रोये। क्योंकि ख़ुदा की मस्लेहत ने उनको इस क़ुर्बानी में शरीक होकर शहीद होने से मजबूर बना दिया था।

हमारी भी क़िस्मत नाज़ करती कि इस क़ुर्बानी में अमली हैसियत से शरीक होते तो फिर ख़ून बहाते। आँसू न बहाते। यह आँसू बहाना तो इस पर है कि इस सआदत को हासिल न कर सके। अब अगर इस तसव्वुर के साथ यह आँसू बहाये जा रहे हैं तो इनसे हिम्मत में कमज़ोरी पैदा नहीं हो सकती बल्कि इसका अमली नतीजा यह होगा कि हमें आरज़ू है। और बेचैनी से इन्तिज़ार कि अब जो दीन की मदद का अमली मौक़ा हमें मिल सके। इसमें अपनी मुमकिन और बा महल क़ुर्बानी से पीछे न हटें। ❁❁❁

बक़िया........... हज़रत अली[अ०] की काबे में विलादत और ....

इसके लिए उन बड़े अहलेसुन्नत उलमा का नाम लिख देना काफ़ी है जिनका ज़िक्र करना इस रिवायत को इसके सही होने की ज़मानत है।

इब्ने मग़ाज़ली मुसन्निफ़े किताबे मनाक़िब, अल्लामा बदख़्शी मुसन्निफ़े नुज़ुलुल अबरार, कमालुद्दीन मुहम्मद बिन तलहा शाफ़ई मुसन्निफ मतालिबुस्सुऊल, मुल्ला मुहम्मद सालेह तिरमिज़ी कश्फ़ी मुसन्निफ़ मनाक़िबे मुरतज़वी, शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी मुसन्निफ़ मदारिजुन्नुबुव्वह, मोलवी मुहम्मद मुबीन फ़िरंगीमहली मुसन्निफ़ वसीलतुन्नजात, सिब्ते इब्ने जौज़ी मुसन्निफ तज़किरा ख़वासुल उम्मह, अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई मुसन्निफ़ इन्सानुल उयून, मूफ़िक़ बिन अहम ख़्वारज़्मी मुसन्निफ़ मनाक़िब, शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी साहेबे इज़ालतुल ख़िफ़ा।

आख़री बुज़ुर्ग यानी हिन्दुस्तान के बैहक़ी हज़रत मुहद्दिस देहलवी ने तो साफ़-साफ़ इस रिवायत के तवातुर की गवाही दी है और लिखा है:

''मुतावातिर ख़बरों से साबित है कि फ़ातिमा बिन्ते असद के बत्न से अमीरुलमोमिनीन की पैदाईश ठीक काबे के अन्दर हुई और आप जुमा के दिन 13 रजब आमुलफ़ील से तीस साल के बाद काबे में पैदा हुए और काबे के अन्दर कोई शख़्स आपसे पहले और आपके बाद पैदा नहीं हुआ।''

इस इबारत से जहाँ इस वाक़िए का तवातुर साबित होत है उसी तरह ये भी मालूम होता है कि यह फ़ज़ीलत हज़रत से ख़ास है और आपसे पहले और बाद किसी को ये इज़्ज़त नहीं मिली मगर क्या कहा जाए तास्सुब को कि जब अमीरुलमोमिनीन[अ०] की इस बड़ाई का इन्कार नक़्शे बर आब हो और इस्लामी तारीख़ ने धुनों पर हाथ रख दिया तो ये बात निकाली गयी कि ये क़िस्सा अमीरुलमोमिनीन की फ़ज़ीलत से ख़ास नहीं है बल्कि हकीम बिन हिज़ाम भी जाहिलियत में काबे के अन्दर पैदा हुआ था।

हम नहीं समझ सकते कि हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी जैसे बड़े आलिम अपनी किताब में क्यों लिख देते हैं कि ''अली[अ०] के पहले और उनके बाद कोई शख़्स काबे में पैदा नहीं हुआ''।

और अख़तब ख़्वारज़्मी मनाक़िब में लिखते हैं ''अली के पहले बैतुल्लाह में कोई शख़्स पैदा नहीं हुआ और ये वह बड़ाई है जिसको ख़ुदा ने बड़ाई और इज़्ज़त की वजह से आपके साथ ख़ास क़रार दिया''।

क्या ये लोग जाहिल थे? तंग नज़र थे? या शिया थे? या तारीख़ और हदीस से बेख़बर थे? यक़ीनन इन मुस्तनद उलमा की खुली बातों के बाद इस ख़याल की कोई हैसियत बाक़ी नहीं रहती। वस्सलाम ❁❁❁